बाजारोन्मुख लोकतंत्र मे भूमंडलीकरण

प्रियंका उदावत – छात्रा, जय नारायण व्यास विश्व विद्यालय, जोधपुर
Email - priyankaudawat1991@gmail.com

सारांश :– पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से लोकतंत्र को सिर्फ उदारतावादी लोकतंत्र तक ही सीमित किया और फिर शीत युद्व के बाद भूमंडलीकरण के पैरोकारों ने उसे भी बाजार आधारित व्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा तक सीमित रहने वाले राज्य के रूप में देखना शुरू किया। तीसरी दुनिया के बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय समाजो के महानगरीय अभिजनों की मदद से भूमंडलीकरण के पैरोकारो ने नागरिक को उपभोक्ता में बदलने की संस्थागत – वैधानिक युक्तियाँ करनी शुरू कर दीं। भूमंडलीय समरूपीकरण के इस अभियान ने उदारतावादी लोकतंत्र के बुनियादी आश्वासन को उलट कर बहुसंख्यक जातीयतावादी शासन के लिए रास्ता साफ करने का काम किया जिसकी प्रतिक्रिया में ये समाज जातीयताओं के हिंसक टकराव का काम किया जिसकी प्रतिक्रिया में ये समाज जातीयताओ के हिंसक टकराव का केन्द्र बन गए। लोकतंत्र के भूमंडलीकरण से उपजी इस विकृति का मुकाबला नये सामाजिक आंदोलनों ने किया। इन आंदोलनों ने सहभागी लोकतंत्र की उन संभावनाओ का संधान किया है जिसे कभी गाँधी और जयप्रकाश नारायण ने सूत्रबद्व किया था।

भूमंडलीकरण का अर्थ – भूमंडलीकरण शब्द आज अन्तर्राष्ट्रिय बाजार मे गुंजायमान है। यह शब्द व्यापार अवसरो की जीवन्तता एवं उनके विस्तार का घोतक है। भूमण्डलीकरण वस्तुतः व्यापारिक क्रिया – कलापो, विशेषकर विपणन सम्बंधी क्रियाओं का अन्तर्राष्ट्रीयकरण करना है। जिसमें संम्पूर्ण विश्व बाजार को एक ही क्षेत्र के रूप मे देखा जाता है। दूसरे शब्दो में भूमण्डलीकरण वी प्रक्रिया जिसमें विश्व बाजारो के मध्य पारस्परिक निर्भरता उत्पत्र होती है और व्यापार देश की सीमाओ मे प्रतिबन्धित न रहकर विश्व व्यापार मे निहित तुलनात्मक लागत लाभ दशाओं का विदोहन करने की दिशा मे अग्रसर होता है।

लोकतंत्र का अर्थ – लोकतंत्र एक खुबसूरत सपने का नाम है। लोकतंत्र का सामान्य अर्थ है, जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा चलाया जाने वाला शासन लोकतंत्र या प्रजातंत्र कहलाता है। लोकतंत्र शासन की एक पद्वति का नाम है, जिसमे सत्ता न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका के बीच बॅटी होती है। पद्वति को चुनाव और राजनीतिक दलों के जरिये वैधता मिलती है।

भूमंडलीकृत लोकतंत्र – भूमंडलीकरण के पैरोकारों की मान्यता है कि उदारतावादी लोकतंत्र ही एकमात्र शासकीय रूप है जिसके तहत सर्वव्यापी हो चुके आधुनिक राज्य का कामकाज केवल यही रूप आज दुनिया के विभित्र समाजो मे तेजी से घटित हो रहे आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की ताकतो का माकूल जरिया बन सकता है। दरअसल इस प्रक्रिया मे तीसरी दुनिया के समाज पहले की ही तरह आर्थिक और राजीनतिक भूमंडलीकरण से होने वाले नुकसानो को झेलने के लिए अभिशप्त बने रहेंगे। बदले हुए संदर्भ मे उनके लिए गुंजाईशे और भी कम हो जायेगी। इन समाजो के सामने जो विकल्प रहे है। उनमे भूमंडलीकरण की प्रक्रिया से अलग हो जाने का विकल्प कभी शामिल नही रहा। इस हिसाब से खुद को भुमंडलीकरण के अनुकूल ढालने के अलावा उनके सामने कोई चारा ही नही है। समय के साथ इन समाजों ने उदारतावादी लोकतंत्र के अपने सांस्कृतिक – ऐतिहासिक रूप विकसित किये है, लेकिन अब उपनी संस्थागत संरचानाओं को पूरी तरह भिन्न अतीत वाले समाजो की तर्ज पर ढालने की अपेक्षा की जा रही है। तीसरी दुनिया के समाजो में से कई महान सभ्यतामूलक अतीत से सम्पन्न रह है। उनके यहॉ शासन के काफी विकसित और जटिल रूपों का इस्तेमाल किया जा रहा था। अपनी प्रजा की सम्मति पर सीधे निर्भर न होते हुए भी उनके शासक अपनी हुकूमत की वैधता प्राधिकार के बहुस्तरीय ढाचें के जरिये प्राप्त करते थे। इस ढांचे मे समाज के विभित्र हितों और पहचानों के लिए कोई न कोई गुंजाईश रहती थी। ऐसा शासक तरह तरह के शासनकारी रूपों की प्रणाली के शीर्ष पर होता था। सत्ता और प्राधिकार उसमे प्रतीकात्मक रूप मे व्यक्त होते थे। अगर राज्य व्यवस्था के विकास में इन समाजो के पारंपरिक लोकतांत्रिक रूपो का समावेश किया जाता तो बिना किसी सामाजिक टूट – फूट के शासनकारी रूपों को लोकतंत्रीकरण संभव हो सकता था।

आधुनिकरण प्रतिनिधित्व मूलक लोकतंत्र को अपनाने और विकसित करने में तीसरी दुनिया के इन समाजो को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। विभिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियों में कभी उपंनिवेशीकरण के कभी पश्चिमीकरण के कारण और कभी आधुनिकीरण के कारण इन समाजो को अपने इतिहास और राजनीतिक सांस्कृतिक परम्पराओं के आधार पर लोकतांत्रिक संस्थाओ को विकसित करने का मौका नही मिला। उन्हे मजबूरन लोकतंत्र के उन रूपों को चुनना पडा जो भिन्न आबो हवा मे विकसित हुये थे।

''भुमंडलीकरण की समग्र परियोजना ने उदारतावादी लोकतंत्र के एक खास रूप की वकालत करना शुरू कर दी है ताकि विश्व अर्थव्यवस्था और बाजार के साथ ज्यादा से ज्यादा संघटन मे आसानी हो। इसी का नतीजा लोकतांत्रिक विमर्श मे आयी अचानक तब्दीली मे निकला है। भूमंडलीकरण के पेरोकारों ने लोकतंत्र क्षैतिज प्रसार की वैकल्पिक संभावनाओ को ही पूरी तरह नकार दिया। नतीजा यह हुआ कि लोकतांत्रिकरण को स्थानीय जरूरतो के अनुकूल नही बनाया जा सका और न ही शासन के वैसे रूपो और निर्णय लेने वाली सरंचनाओं को विकसित किया जा सका। किसी खास समाज मे लोकतंत्र को व्यापक रूप से सहभागिता आधारित और जनता के प्रति सीधे जबाबदेह बना कर लोगो की चेतना को उन्नत नही किया जा सका। विभित्र सांस्कृतिक परिवेश के मुताबिक लोकतंत्र के संस्थागत रूपो को ही नही गढ सके। वे यह भी तय नही कर सके कि वे किस रफ्तार से परिवर्तित होना पसंद करेंगे। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने तीसरी दुनिया के मसाजो को ये गुंजाइशे नही दी।

भूमंडलीकरण यानी भूमंडलीय समरूपीकरण की परियोजना अपनी आर्थिक और राजनितिक सफलता के लिए लोकतांत्रिक निर्णय प्रक्रिया की भूमंडलीय संस्थाओ पर इतनी नही है जितनी विश्व पूँजीवादी व्यवस्था की वर्चस्वी ताकत पर है। यह कोई अनायास ही नही है कि आजकल संयुक्त राष्ट्र की वीटो आधारित सुरक्षा परिषद् में भूमंडलीय सत्ता ज्यादा केन्द्रित हो गयी है, और इस विश्व संस्था के अन्य संगठनो के महत्व का काफी कुछ क्षय हो गया है।

भूमंडलीय सता का केन्द्र किसी एक देश अमेरिका या पश्चिम के किसी अन्य राष्ट्र में है। भूमंडलीय समरूपीकरण का मकसद हल करने के लिए बहुराष्ट्रीय संस्थाऐं अपनी ताकत का मिजा जुला इस्तेमाल कर रही है। इनमें अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन और बहुराष्ट्रीय निगम शामिल शामिल है। इस सत्ता का राजनितिक सांस्कृतिक आधार धनी के साथ साथ गरीब देशो के बड़े – बड़े महानगरो में भी केद्रित है। भूमंडलीय समरूपीकरण की इस परियोजना ने भाषायी सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भो में बड़ी बड़ी दरारे पैदा कर दी है। इन खाइयो को महानगरीय और ग्रामीण – कस्बाई जीवन के बीच, अभिजनो और आम जनता के बीच और सरकारो की शासनकारी संस्थानो और शासितो के बीच देखा जा सकता है।

बैंकरो, व्यापारियो, तकनीकशाहों और प्रबंधको से बना हुआ महानगरीय अभिजन लोकतंत्र के अलावा शासन के किसी भी यप को संदेह की निगाह से देखता है। स्थानीय – सामुदायिक रूप को तो और वह खासतौर से नापसंद करता है, भले ही वह राजनीतिक लोकतंत्र की संस्कृति में कितना ही रचा पगा क्यो न हो। ये अभिजन मानते है कि शासन के स्थानीय – सामुदायिक रूप राष्ट्र राज्य और बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के व्यापक संस्थागत ढॉचे से बेमेल और संरचना के लिहाज से असंगत है।

भूमंडलीकरण के पैरोकार उदारवादी लोकतंत्र को एक ऐसे औजार की तरह देखते है जिसके जरिये विश्व – पूँजीवाद को टिकाया और चलाया जा सकता है। उदारतावादी लोकतंत्र से बाजार आधारित लोकतंत्र का काम लेकर ये अभिजन चाहते है कि तीसरी दुनिया के देश अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी के बेरोक टोक आवागमन की राजनीतिक – संस्थागत गारंटी और उनकी विश्व – अर्थव्यवस्था के हितानुकूल आचरण सुनिश्चित करे। भूमंडलीय लोकतंत्र का नया विमर्श इस प्रकार भूमंडलीय सत्ता व्यवस्था को सारी दुनिया में लोकतंत्र की रक्षा का ठेका दे देता है। जहॉ जरूरी होता है यह व्यवस्था अक्सर संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में फौजी हस्तक्षेप के जरिये यह काम करती है। यह व्यवस्था पूरी कोशिश करती है कि जी – 8 देशो और अन्य आर्थिक रूप से विकसित लोकतंत्रो के हाथ में ही हथियार बेचने और प्रोद्योगिकीय ज्ञान की बढ़ोतरी रहे।

पूरी दुनिया के संसाधनो तक अपनी निर्बाध और एकाधिकारी पहुँच बनाये रखने के लिए विश्व पूँजीवादी व्यवस्था पहुँच बनाये रखने के लिए विश्व पूँजीवादी व्यवस्था महानगरीय सभ्यता और जीवन शैली को बढावा देने में लगी रहती है। यह ऐसी

राजनीतिक संस्कृति है, जिसमें उपभोक्तावाद नागरिको पर हावी रहता है। नागरिकता को उपभोक्तावाद के मातहत बनाकर यह व्यवस्था अपनी सत्ता का आधार स्थापित करती हे। नागरिकता का विचार मूलतः सीमाबद्व भू – क्षेत्रियता का विचार है, जबकि उपभोक्तावाद सीमाहीन भूमंडलीय राजनीतिक और बाजार के हाथो का औजार बन सकता है। महानगरो में रहने वाले व्यक्तियो को यह व्यवस्था की भूमंडलीय चौधराहट कायम रखने और राष्ट्र राज्यो के भीतर महानगरीय वर्गो का वर्चस्व बनाये रखने में सुविधा होती है। ऐसा लगता है कि उदारतावादी लोकतांत्रिक प्रणाली के तहत संरचित विभिन्न राष्ट्र राज्य आधारित शासन –व्यवस्था में धीरे धीरे राष्ट्रीय नागरिकता की अवधारणा खत्म होती चली जायेगी। दूसरी तरफ भूमंडलीय उपभोक्तावाद पर आधारित प्रणाली उत्तरोन्तर मजबूत होती जायेगी।

लोकतंत्र को ही उदारतावादी लोकतंत्र में सीमित किया गया और फिर शीत युद्व के बाद इस सीमित विमर्श को भी बाजार आधारित लोकतंत्र के सार्वभौम विमर्श के और भी छोटे खांचे में फिट कर दिया। राजनीतिक रूप से भूमंडलीयकरण के पैरोकार लोकतंत्र को बुनियादी तौर पर निर्णयकारी प्रक्रियाओं के स्थानीय सहभागिता वाले संदर्भ में नही देखते। स्थानीय लोकतंत्र उन्हे बाजार आधारित लोकतंत्र के रास्ते की बाधा लगता है। बाजार आधारित लोकतंत्र के नये रूप में उदारतावादी समाज में सता की विराट संरचनाओ के राजनीतिक – सांस्कृतिक वर्चस्व को बनाये रखने का जरिया बन कर रह गया हैं इस वर्चस्व के जरिये उदारतावादी राज्य हर समाज में आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समरूपीकरण सुनिश्चित कर सकता है। लेकिन समरूपीकरण की परियोजना को लागू करने के चक्कर में तीसरी दुनिया के बहुजातीय समाजों में राज्य की संस्था एक खास तरह की कशमकश में फंस जाती है। हर जगह बाजार आधारित लोकतंत्र रचने के दौरान राज्य को अपनी उदारतावादी संस्थाओ को उस सामाजिक और सांस्कृतिक अस्थिरीकरण से बचाना पड़ता है। जो बाजार के पक्ष में राज्य के हस्तक्षेप के कारण ही पैदा होता है। साथ ही राज्य को समाज पर शासन करने के लिए एक स्थिर राष्ट्रीय सांस्कृतिक आधार खड़ा करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है।

जातीय और वर्गीय टकराव से ग्रस्त होने के बाद भी तीसरी दुनिया के समाजो के लिए उदारतावादी राज्य पर आधारित बाजार लोकतंत्र के मॉडल को ही उपयुक्त मानने के दो कारण बताये जाते है –

1. राजनीतिक उदारतावाद में राज्य को एक औजार के रूप में देखने की प्रवृति का होना जिसके तहत राज्य को व्यक्तिगत और निजी लक्ष्यों की पूर्ति का वाहक माना जाता है।
2. विचारधारात्मक रूप से उदारतावादी राज्य देश – कालगत, सांस्कृतिक और वंशगत विभिन्नताओं के आधार पर मानवीय विविधताओं को मान्यता नहीं देता इसलिए यह समुदायो को उनकी आदिम – धार्मिक परम्पराओं से छुटकारा दिला कर राष्ट्रीय लक्ष्यों के लिए प्रेरित करता हैं। उदारतावादी राज्य प्रतिनिधित्व मूलक संस्थाओं की मदद से किसी भी राष्ट्र में समाज पर हुकूमत करने के लिए एक नया सांस्कृतिक आधार खड़ा कर सकता है। तीसरी दुनिया के नेताओं को लगता है कि किसी सहभागी – लोकतांत्रिक प्रणाली के बजाय नयी भूमंडलीय व्यवस्था में हिस्सेदारी उदारतावादी राज्य के जरिये आसानी से हासिल हो सकती है।

निष्कर्ष :– पश्चिमी विमर्श ने लोकतंत्र को सिर्फ उदारतावादी लोकतंत्र तक ही सीमित किया और फिर शीत युद्व के बाद भूमंडलीकरण के पैरोकारो ने उसे भी बाजार आधारित व्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा तक सीमीत रहने वाले राज्य के रूप में देखना शुरू कर दिया। तीसरी दुनिया के बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय समाजो के महानगरीय अभिजनो की मदद से भूमंडलीकरण के पैराकारो ने नागरिक को उपभोक्ता बदलने की संस्थागत वैधानिक युक्तिया करनी शुरू कर दी। भूमंडलीय समरूपीकरण के इस अभियान ने उदारतावादी लोकतंत्र के बुनियादी आश्वासन को उलट कर बहुसंख्यक जातीयतावादी शासने के लिए रास्ता साफ करने का काम किया। जिसकी प्रतिक्रिया में ये समाज जातीयताओ के हिंसक टकराव का केन्द्र बन गये। लोकतंत्र को भूमंडलीकरण से उपजी इस विकृति का मुकाबला किया नये सामाजिक आंदोलनो ने उन्होंने सहभागी लोकतंत्र की उन संभावनाओ का संधान किया जिसे कभी गॉधी और जयप्रकाश नारायण ने सूत्रबद्व किया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. भारत का भूमंडलीकरण, संपादक – अभय कुमार दुबे, प्रकाशक – वाणी प्रकाशन प्रा.लि. , प्रथम संस्करण – 2003 '' वैकल्पिक भूमंडलीकरण की ओर''
2. लेखक – विजय प्रताप , पृष्ठ संख्या – 351
3. '' बांजारोन्मुख या सहभागी लोकतंत्र लेखक – धीरूभाई सेठ, पृष्ठ संख्या – 106
4. फ्रांसिस फुकुयामा, द एंड ऑव हिस्ट्री एंड द लास्ट मेन, न्यूयार्क, पेंग्विन – 1112
5. आई. डब्ल्यू मेबेट (संपादक) पैटर्न्स ऑव किंगशिप एंड ऑथारिटी इन ट्रैडिशनल एशिया डोवर एन.एचः क्रम हेल्म – 1185
6. डेविड हेल्ड '' डेमाक्रैसी एंड ग्लोबल लाइजेशन आल्टर्नेटिव्यः सोशल ट्रांसफार्मेशन एंड हयूमन गवर्नेंस – 16 (2),
7. डा.बी.एल फड़िया (लेखक) अन्तर्राष्ट्रीय संबंध